मधु कांकरिया के उपन्यास 'सेज पर संस्कृत' में नारी विद्रोह का स्वर : धार्मिक मान्यताओं एवं आडम्बरों के संदर्भ में

सरिता पारीक
शोधार्थी, हिन्दी विभाग
अतिथि प्राध्यापक, एन.सी.डब्ल्यू.ई.बी.
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

सारांशिका

मधु कांकरिया हिंदी साहित्य में कोमल भावनाओ वाली एक सवेंदनशील लेखिका के रूप में जानी जाती है। मधु कांकरिया उस दबे कुचले और समाज के वंचित प्रत्येक वर्ग के बारे में अपनी कलम द्वरा लिखती जिसने लाख कष्टों के बावजूद खुली हवा में उड़ने की जिद्द नहीं छोड़ी। मधु अपनी रचनाओ में हकीकत की कडवी सच्चाई को इतने करीब से छूती है कि पढने वाला भी उनके द्वारा लिखे गए विचारो में पूरी शिद्दत से खो जाता है। कोलकाता से जुड़े होने के कारण इनके लेखन में बहुत मिठास है। यही वजह है विषय कितना भी जटिल क्यों न हो उनके शब्दों में जीवन की सच्चाई का एक मुलामियत का आभास होता है। इनके लेखन में जीवन को निकट से देखने का हुनर भी है। रेड लाइट एरिया के नशेड़ियों, वैश्या के जीवन के दुख दर्द को जिस प्रकार मधु ने अपने उपन्यासों में दिखाया है, उतनी हिम्मत दिखाना सभी लेखिकाओ के बस की बात नहीं है। सलाम आखिरी उपन्यस में मधु ने जिस प्रकार वेश्या के जीवन का संघर्ष और पीड़ा के दिखाया है। कैसे एक सभ्य समाज इन बदनाम गलियों में अपनी शारीरिक भूख मिटाने जाता है लेकिन यदि वही उसे दिन के उजाले में इन महिलाओ के दुख दर्द पीड़ा को सुनने के लिए जाना पड़े तो वह इन गलियों में नहीं जायेगा क्योंकि तब उसे अपनी प्रतिष्ठता और समाज में अपने रुतबे का अहसास होता है। साथ ही साथ मधु जी जैन धर्म में छोटी बच्चियों की दीक्षा एवं मठों और आश्रमों में धर्म गुरुओं के झूठे आडम्बरों को भी उजागर किया है। ये गुरु धर्मगुरु बनकर इन छोटी बच्चियों का यौन शोषण करते है द्यजो गुरु इन बच्चियों और महिलाओं को विषय वासनाओ से निकलने की शिक्षा देते है, वही स्वयं इन्ही विषय वासनाओ में फंसे रहते हुए किस प्रकार धर्म की आड़ में इन महिलाओ और बच्चियों को यौन शोषण करते है। इन्ही को मधु कांकरिया ने अपने उपन्यास सेज पर संस्कृत में उजागर किया है।

सेज पर संस्कृत उपन्यास धर्म में फैले पाखंड और आडम्बर पर प्रहार करता है। धार्मिक गुरुओं द्वारा धार्मिक संस्थानों में महिलाओं पर यौन शोषण के प्रति अपना आक्रोश दिखता है। धर्म गुरुओं की पोल खोलता उपन्यस सेज पर संस्कृत उन सभी मान्यताओं पर प्रहार करता है जो छोटी छोटी बच्चियों को उनके बचपन को धर्म के नाम पर नष्ट कर देता है जिस बचपन में लड़की को पढना लिखना चाहिए, खेलना चाहिए, परिवार में अपने माता–पिता भाई बहन के साथ अपना समय बिताना चाहिए उसी बचपन को आश्रम में इन ढोंगी बाबाओं के आश्रय में हाथ में माला और साधू के वस्त्र पहनकर कठोर साधना का जीवन व्यतीत करने पर विवश कर देता है द्यबात यहाँ भी खत्म नहीं होती जिस मन की शांति और मोक्ष के लिए दीक्षा के पश्चात् ये कठिन जीवन जीने के लिए उन्हें प्रोत्साहित किया जाता है उसी आश्रम में उन्ही धर्म गुरुओ में से किसी एक द्वारा उसका यौन शोषण किया जाता है जो गुरु ये शिक्षा देते है की साधना और कठिन जीवन द्वारा मन को वश में रखा जा सकता है वही गुरु स्वयं अपने मन को काबू रखने में असमर्थ दिखते है। मधु कांकरिया का उपन्यास सेज पर संस्कृत (2008) में लिखा गया था। इसमें लेखिका ने जैन धर्म में छोटी बच्चियों को दीक्षा में परिवार और समाज के लोग कैसे इतनी खुशी से शामिल होते है ताकि उनकी बच्ची धर्म गुरुओ के सानिध्य में अपना पूरा जीवन मोक्ष की छाह में बिताती है, और वही धर्म गुरु जब उसका शील भंग करते है उसी को आधार बनाकर ये उपन्यास लिखा गया है ताकि धर्म गुरुओं का ये गन्दा रूप समाज के समक्ष आ सके।

मुख्य बिन्दु : दीक्षा, मोक्ष, आडंबर, चक्रव्यूह, संथारा, शीलभंग

प्रस्तावना

स्त्री सदैव परंपरा एवं रूढ़िवादी विचारों की शिकार है। स्त्री सदियों से हजारों शाखाओं में कटती, संकुचित, परिवर्तित होती हुई इस मुकाम पर आई है। इस परंपरा को बनाने में धर्म प्रचलित संस्कृति के प्रारूप देश का इतिहास युगों के दबाव, रूढ़ियां, संस्कार, चिंतन की सभी प्रणालियां शामिल है। समाज स्त्री को बनाए रखने के लिए लगातार माहौल तैयार करता है। आज की स्त्री शिक्षित समझदार एवं अपने अधिकारों के प्रति जागरूक है।

समाज ने स्त्री–पुरुष के लिए जो अलग–अलग नियम बनाए गए हैं उनके प्रति विरोध करते नजर आ रही है। नारी विद्रोह के स्वर हिंदी साहित्य में लगातार सुने जा सकते हैं। विद्रोह का यह स्वर परिवारिक, सामाजिक, राजनैतिक, व्यावसायिक, धार्मिक, सांस्कृतिक किसी भी प्रकार का हो सभी प्रकार के शोषण के खिलाफ है। आज की नारी पुरुष द्वारा बनाए गए नियमों को तोड़कर स्वतंत्र जीवन जीना चाहती है। महादेवी वर्मा ने जब कहा ''तोड़ दे यह क्षितिज मैं भी देख लूं उस पार क्या है''? बड़ी अटपटी लगी होगी लेकिन आज की नारी उस क्षितिज को तोड़कर अपनी पहचान एवं स्वत्व की तलाश कर रही है।

अपने अधिकारों के प्रति जागरूक सचेत होकर वह समाज के पुरातन और जड़ मूल्यों को चुनौती भरे स्वर में ललकारने की मुद्रा में खड़ी है। अपनी पहचान अपनी अस्मिता समाज के प्रत्येक वर्ग में स्थापित करने में लगी है। आज पुरुषों की तुलना में नारी का हीन भाव लुप्त होता नजर आ रहा है। आज नारी अपना अबला रूप मिटाकर पुरुष एकाधिकार वाले क्षेत्रों में भी अपना व्यक्तित्व दीप्तिमान कर रही है। उनके इस कार्य में लेखिकाओं ने अपने कथा साहित्य भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। समाज में नारी के यथार्थ को उसकी संपूर्ण भयावहता के साथ चित्रित करने में डरते नहीं है। लेखिका ने अपने कथा साहित्य में नारी की अनछुई स्थितियों नारी की दशा और अनदेखी क्षेत्रों को पूरी सत्यता एवं बेबाकी से लिख रही है।

नारी शोषण समाज में पुरुषों द्वारा प्रत्येक क्षेत्र में किया जाता है चाहे वह परिवार हो अथवा समाज एवं राजनीति का क्षेत्र हो अथवा धार्मिक स्थल सभी स्थानो पर पुरुषों द्वारा स्त्री का शोषण शारीरिक एवं मानसिक किसी भी रूप में हो सकता है। लेकिन जब ये शोषण यौन शोषण का रूप ले लेता है तब और भी भयावह हो जाता है जब ये यौन शोषण धार्मिक संस्थानों, आश्रमों में धार्मिक गुरुओं द्वारा किया जाता है। धार्मिक मान्यताओं एवं आडम्बरों के कारण महिलायें धार्मिक संस्थानों में ढोंगी बाबाओं के चंगुल में फँस जाती है। समाज के लोग ही इस कार्य में अहम रोल निभाते है। भारत में धर्म के नाम पर कोई भी कानून नहीं है धर्म और आस्था के नाम पर धर्म गुरु महिलाओं के साथगलत व्यवहार करते हैं। आस्था के नाम पर महिलाएँ इन ढोंगी बाबाओं के चंगुल में फँस जाती हैं। आज भी समाज में शिक्षा के नाम पर छोटे छोटे बालकों को इन गुरुओ की शरण में भेज देते हैं। इन बच्चों को जिस उम्र में दीक्षा का मतलब भी समझ नहीं आता लेकिन माता–पिता के दबाव के कारण वो लड़कियाँ आश्रम में चली जाती हैं। परिवार में लड़की के चारों तरफ संस्कारों का ऐसा पहरा रहता है जिससे निकलना बहुत मुश्किल है। धार्मिक आडंबर, रूढ़िवादी परंपरागत सोच, सामाजिक संस्कार सभी मिलकर अंधकार का ऐसा परिवेश जीवन के चारों और निर्मित कर देते हैं जिससे बाहर निकलना असंभव है।

मधु कांकरिया अपने 'सेज पर संस्कृत 'उपन्यास में धर्म की आड़ में हो रही अपसंस्कृति का विरोध बहुत ही चातुर्य और समझदारी से किया है और उनको इस कार्य में कामयाबी भी मिली है। स्त्री विमर्श को केंद्र में रखकर कई लेखिकाओं ने लिखा लेकिन 'सेज पर संस्कृत' जैसा उपन्यास लिखने की हिम्मत केवल मधु कांकरिया ने ही दिखाई है। मधु ने पूरी हिम्मत के साथ धार्मिक आडम्बरों के चक्रव्यूह में फँसी स्त्री मन की व्यथा को उजागर करने की कोशिश की है।

मधु कांकरिया के पास धर्म और समाज को समझने की जो संवेदनशील दृष्टि है। वह धर्म और समाज ही संधियों में छिपे झींगुर एवं तिलचट्टे को समाज के सामने लाते हैं इसमें कहने की आवश्यकता नहीं कि लेखिका ने बड़े ही साहस और धैर्य के साथ धर्म में हो रहे गलत आचरण का पर्दाफाश किया है। उन्होंने अपने उपन्यास में मारवाड़ी समाज के जीवन और कुरीतियों को उभार कर जैन धर्म के सामने संकट खड़ा कर दिया। 'सेज पर संस्कृत 'उपन्यास की शुरुआत वहां से होती है जहां परिवार में दो–दो मौतों को झेलने के बाद सारी खुशियाँ फांसी पर झूलने लगी थी परिवार में दो बच्चियां और एक माँ है। वो लोग भूल गए थे कि संसार में सुंदर चीजें भी हैं, चाँद सितारे भी है, जिंदगी के दूसरे गोरखधंधे भी हैं इस संसार में। लेखिका ने विद्रोह का पहला स्वर उस समय उठाया जब उसकी माँ ने नागपंचमी के दिन गर्म चाय पीने से मना कर दिया संघमित्रा ने अपनी अम्मा से कहा हम तो जैन हैं जैन धर्म में इन अंधविश्वासों और कर्मकांड के लिए कोई जगह नहीं होनी चाहिए तब इन अंधविश्वासों और कर्मकांडों विरोध करते हुए संघमित्रा के पिता ने कहा हम जैन अवश्य है पर हुआ तो हमारा भी धर्मांतरण ही है ना हम राजपूत से जैन बने हैं। धार्मिक विद्रोह का स्वर उस समय उठा जब घर में एक नहीं तीन–तीन दीक्षा, गुस्से मे संघमित्रा बिफर पड़ी। छुटकी की दीक्षा को रोकने के लिए। अब घर पूरी तरह देवस्थान बन गया और हम सभी देवियां। संघमित्रा के भीतर क्रोध की अग्नि जल रही थी। आश्रम से जाते जाते संघमित्रा ने फिर एक तीर छोड़ दिया महाराज साहब क्या आपने वासना पर विजय पा ली है। संघमित्रा फिर भड़की इतनी सारी किताबों का ढेर, इतने सारे विचार इतनी विराट जिंदगी और इतनी किताबों के बीच में आचार्य रजनीश की एक पुस्तक जिसका नाम 'संभोग से समाधि तक' हर दिन इसी प्रकार अपनी बदरंग उम्मीदें धुँआ होते जा रही थी ।

बहरहाल आधी से ज्यादा दीक्षा किशोर दीक्षा होती हैं युवा मन कभी इस बार तो कभी उस पार। मधु कांकरिया में सेज पर संस्कृत उपन्यास द्वारा धार्मिक कर्मकांडों में लिप्त होकर जो आडंबर किए जाते हैं उनको उजागर किया है। इस उपन्यास द्वारा लेखिका ने जैन धर्म अपनाकर सन्यास लेने के पश्चात किस प्रकार छोटी–छोटी बच्चियों और बच्चों तथा युवाओं के मन पर काबू पाकर उनका जीवन नीरस बना दिया जाता है। उल्लास भरे जीवन जीने के स्थान पर उनको निराशाजनक जीवन जीने के प्रेरित किया जाता है कठोर नियमों का पालन केवल इसलिए किया जाता है ताकि इसके पश्चात मोक्ष की प्राप्ति होगी। धार्मिक मान्यताओं के विरुद्ध विद्रोह का स्वर उस समय उठा जब एक छोटी सी 13 साल की बच्ची को आश्रम में दीक्षा दिलाने के लिए बाध्य किया जाने लगा। 13 साल की बच्ची जिसे दीक्षा का कोई मतलब भी नहीं पता उसकी स्कूल मे पढ़ने की उम्र में उसे आश्रम में केवल मोक्ष प्राप्ति के लिए भेजना केवल अंधविश्वास को ही प्रदर्शित करता है।

मां के कहने पर वह बच्ची साध्वी बन जाती है क्योंकि तब उसे समझ नहीं होती लेकिन वहीं बच्ची जब युवावस्था धारण करती है तब उसके यौवन मन मन की चंचलता और जीवन साथी की इच्छा हिलोरें मारने लगती है साथी के संसर्ग की चाहत इतनी प्रबल होती है कि वह इस साध्वी जीवन को छोड़ना चाहती है वह विभिन्न प्रयासों के पश्चात सफल भी हो जाती है लेकिन जिस साथी की तलाश इस साध्वी ने की वो कोई और नहीं उसी के धार्मिक गुरु विजेंद्र स्वामी थे लेकिन जब विजेंद्र स्वामी ने धर्म का चोला उतार दिया तो उसी के शिष्य अभय मुनि को जब इस प्रेम प्रसंग का पता चला तो उसने साध्वी का शील भंग कर दिया। इसके पश्चात साध्वी दिव्य प्रभा ना तो शादी करने के लायक रही रही और ना ही सामान्य जीवन जीने के लायक। आश्रम के गुरु माँ ने साध्वी को गर्भावस्था में ही आश्रम से निकाल दिया। एक 59 वर्षीय महिला के संथारा के बाद मृत्यु होने से संघमित्रा ने मुनि महाराज के आगे प्रश्न किया क्या उपयोगिता ऐसे उपवास, तपस्या और संथारे की जिससे मानवता का कुछ भी भला ना हुआ हो बल्कि अपमान ही हुआ जीवन का। महाराज सारे जीवन साधना और शिक्षा दीक्षा का एक ही उद्देश्य होता है सत्य की खोज और उसके लिए जिस जुनून की जरूरत होती है वह वह किसी पागल फकीर में भी हो सकती है। इसी पागलपन का परिणाम था कि गैलीलियो आइंस्टाइन कोपरनिकस जो अपने अनुसंधान में इतने लीन हो जाते थे उनके आहार निद्रा तक छूट जाती थी और अंततः वे सत्य तक पहुँच जाते थे। उनका लक्ष्य तपस्या नहीं लक्ष्य रहता था। सत्य की खोज और इसी खोज के क्रम में उनसे तपस्या अनायास उत्पन्न हो जाती थी जो कि आपके यहां तो लक्ष्य ही तपस्या और रहा महावीर को

जानने की बात तो महाराज महावीर को तो जानने के बाद ही जान पाई हूं क्या आपके इतने धनकुबेर और अरबपति, करोड़पति कोई लखपति भक्तों में सही मानने में कोई भी महावीर का अनुयाई नहीं निकला आपके यहाँ तो जो जितना बड़ा पूँजीपति वह उतना ही सम्मानजनक व्यक्ति। क्षमा करें गुरुदेव पर यह आपकी दुनिया खद्दर के नीचे मुलायम वस्त्र पहनने वालों की दुनिया है। यह सेज पर संस्कृत बोलने वालों की दुनिया है। कौन सा प्रधान आपके धर्म में धोखाधड़ी, जालसाजी, चोर बाजारी, मिलावट, जमाखोरी, टैक्स चोरी, मुनाफाखोरी, स्मगलिंग, बाल शोषण; जैसे जघन्य अपराधों को नहीं अपनाता और तो और नकली दवा बेचने वालों और खाद्यान्न में मिलावट करने वालों को भी पाप घोषित नहीं किया जाता जिससे हजारों लाखों परिवार बर्बाद हो जाते हैं आपका धर्म इंसानों में नहीं जीव

जंतु में ज्यादा दिलचस्पी रखता है। कीड़ों मकोड़ों को ही समर्पित है आपका यह धर्म। मनुष्य में जो कीड़े लगे हैं उनकी तो आपको फिक्र नहीं है। आपका सबसे बड़ा और सम्मानित श्रावक समुदाय है एक से एक अपराध भरे हैं। आपके इस श्रावक समुदाय में, आप इन सब का विरोध नहीं करेंगे क्योंकि यह श्रावक समाज ही आप ही सबसे बड़ी शक्ति और सेना है। महाराज जो आस्था बुद्धि और विवेक की हत्या कर देता है वह आस्था नहीं अंधविश्वास होता है। समाज में व्याप्त कुरीतियों अन्याय अराजकता एवं शोषण के विरुद्ध धर्म का जन्म हुआ पर जिस प्रकार गंगा अपने उद्‌गम में निर्मल पवित्र एवं पारदर्शी होती है पर धीरे–धीरे वह प्रदूषित होती जाती है वैसे ही कालांतर में सारे धर्म उन्हीं बुराइयों के शिकार होते हुए जिनके उन्मूलन के लिए उनका जन्म हुआ था चिंतन के दूसरे द्वार पर खड़ी संघमित्रा सोच रही थी पर धर्म की मार सबसे अधिक स्त्री जीवन पर ही क्यों पड़ी इस पर मालविका कहती है धर्म की मार केवल स्त्रियों पर ही नहीं उन सभी पर पड़ी जो निर्बल, अज्ञानी, वंचित और असहाय थे।

यह सिर्फ भारत में ही नहीं विश्व के सभी देशों में हुआ मध्यकाल में दास प्रथा इसाई धर्म का अभिन्न अंग थी। पोप, पादरी एवं कुलीन वर्ग के सरंक्षण में यह प्रथा फलती फूलती रही इसलिए ईसा मसीह ने करुणा प्रेम और भाईचारे का संदेश अवश्य दिया पर पहले से चली आ रही दास प्रथा, शोषण एवं विषमता के प्रश्न पर वे भी मौन रहे। क्या यही है असंभव का संभव ? पूरे समाज के समक्ष साध्वी के पवित्र बाने में जिसका धर्मगुरु ने वरण किया, किसने फेंका उसे इस देह मंडी के इस भयावह अँधेरे में ? और उसे खबर तक नहीं दर्द से भरी निगाहों से संघमित्रा ने जब कमरे की चारों तरफ देखा तो लगा मानो ये कोई साक्षी हो एक पूरे युग का, छुटकी के इस पूरे महाविनाश का। संघमित्रा का विद्रोही स्वर उस समय फूटा जब छुटकी ने अभय मुनि की लंपटता के बारे में बताया अभय मुनि का कलंक कहीं विजयेंद्र मुनि पर ना आ जाए।

इस कारण संघ से निष्कासित होने पर भी मुंह पर ढक्कन लगाए रखा इसके बाद संघ ने उसे चाचा के हवाले कर दिया और चाचा ने बड़ी निर्दयता के साथ उसे एक कोठे पर छोड़ दिया इन बदनाम गलियों में छुटकी ने एक बच्चे को जन्म दिया जिसका नाम ऋषि कन्या रखा गया। छुटकी जो आश्रम में दिव्य प्रभा के नाम से जानी जाती थी। उसने बहुत ही पीड़ा ग्रस्त होकर इस संसार को छोड़ा। संघ मित्रा ने अभय मुनि जिन्होंने दिव्य प्रभा का यौन शोषण किया था उसका कत्ल कर दिया और इस कारण संघ मित्रा को जेल भेज दिया गया जहाँ जज ने उनसे पूछा कि आप जान बचाकर भाग सकती थी क्यों किया आत्मसमर्पण? इस पर संघमित्रा कहती है हाँ मैं भाग सकती थी। शायद अपनी जान भी बचा लेती, पर भागने से दुनिया नहीं बदलती। दुनिया बदलती है दुनिया की गंदगी को साफ करने से, अपने हाथ गंदे करने से। मैं इस घटना को इस सत्य को भविष्य और इतिहास को सौंपना चाहती हूँ। आज सारे धार्मिक मस्तिष्क घृणित मस्तिष्क बन चुके हैं क्योंकि ये आदमी को आदमी की तरह जीने नहीं देने देते और जब आदमी आदमी की तरह जिएगा ही नहीं तब वह तो जानवर ही बनेगा जज साहब।

निष्कर्ष :

यह उपन्यास धर्म की आड़ में हो रहे आडंबर एवं कुकर्मों को उजागर करता है। यह उपन्यास उन स्त्रियों की पीड़ा को दर्शाता जो परिवार के दबाव में आकर सन्यास तो ले लेती है लेकिन जब वे उससे बाहर निकलना चाहती हैं तो उन्हें किन–किन संघर्षों का सामना करना पड़ता है। सेज पर संस्कृत उपन्यास महिलाओं द्वारा धार्मिक नियमों में बंधे समाज द्वारा पीड़ित स्त्री की गाथा है। जहाँ महिला और पुरूष सन्यास तो ले लेते हैं लेकिन उनके मन में दबी इच्छाओं पर वे पूरी तरह काबू नहीं कर पाते। जीवन जीने की चाहत उनमे कहीं ना कहीं सम्मिहत रहती है जो विजेंद्र मुनि, छुटकी तथा अभय मुनि सभी में थी।

सन्दर्भ सूची :

1. डॉ उमा शुक्ल, डॉ माधुरी खेडा (1995), आधुनिक कथा साहित्य में नारी : स्वरूप और प्रतिमा, अरविंद प्रकाशन मुंबई।
2. डॉ गोपा जोशी (2006) भारत में स्त्री असमानता : एक विमर्श हिन्दी माध्यम निदेशालय।
2. मधु कांकरिया (2010) सेज पर संस्कृत, नई दिल्ली : राज कमल प्रकाशन, पृष्ठ संख्या–8।
4. मधु कांकरिया (2010) सेज पर संस्कृत, नई दिल्ली : राज कमल प्रकाशन, पृष्ठ संख्या–9।
5. मधु कांकरिया (2010) सेज पर संस्कृत, नई दिल्ली : राज कमल प्रकाशन, पृष्ठ संख्या–69।
6. मधु कांकरिया (2010) सेज पर संस्कृत, दिल्ली : नई कमल प्रकाशन, पृष्ठ संख्या–108।
7. मधु कांकरिया (2010) सेज पर संस्कृत, नई दिल्ली : राज कमल प्रकाशन, पृष्ठ संख्या–115।
8. मधु कांकरिया (2010) सेज पर संस्कृत, नई दिल्ली : राज कमल प्रकाशन, पृष्ठ संख्या–116।
9. मधु कांकरिया (2010) सेज पर संस्कृत, नई दिल्ली : राज कमल प्रकाशन, पृष्ठ संख्या–118।
10. मधु कांकरिया (2010) सेज पर संस्कृत, नई दिल्ली : राज कमल प्रकाशन, पृष्ठ संख्या–120।
11. मधु कांकरिया (2010) सेज पर संस्कृत, नई दिल्ली : राज कमल प्रकाशन, पृष्ठ संख्या–207।
12. मधु कांकरिया (2010) सेज पर संस्कृत, नई दिल्ली : राज कमल प्रकाशन, पृष्ठ संख्या–208।